उगता सूरज

2013-14

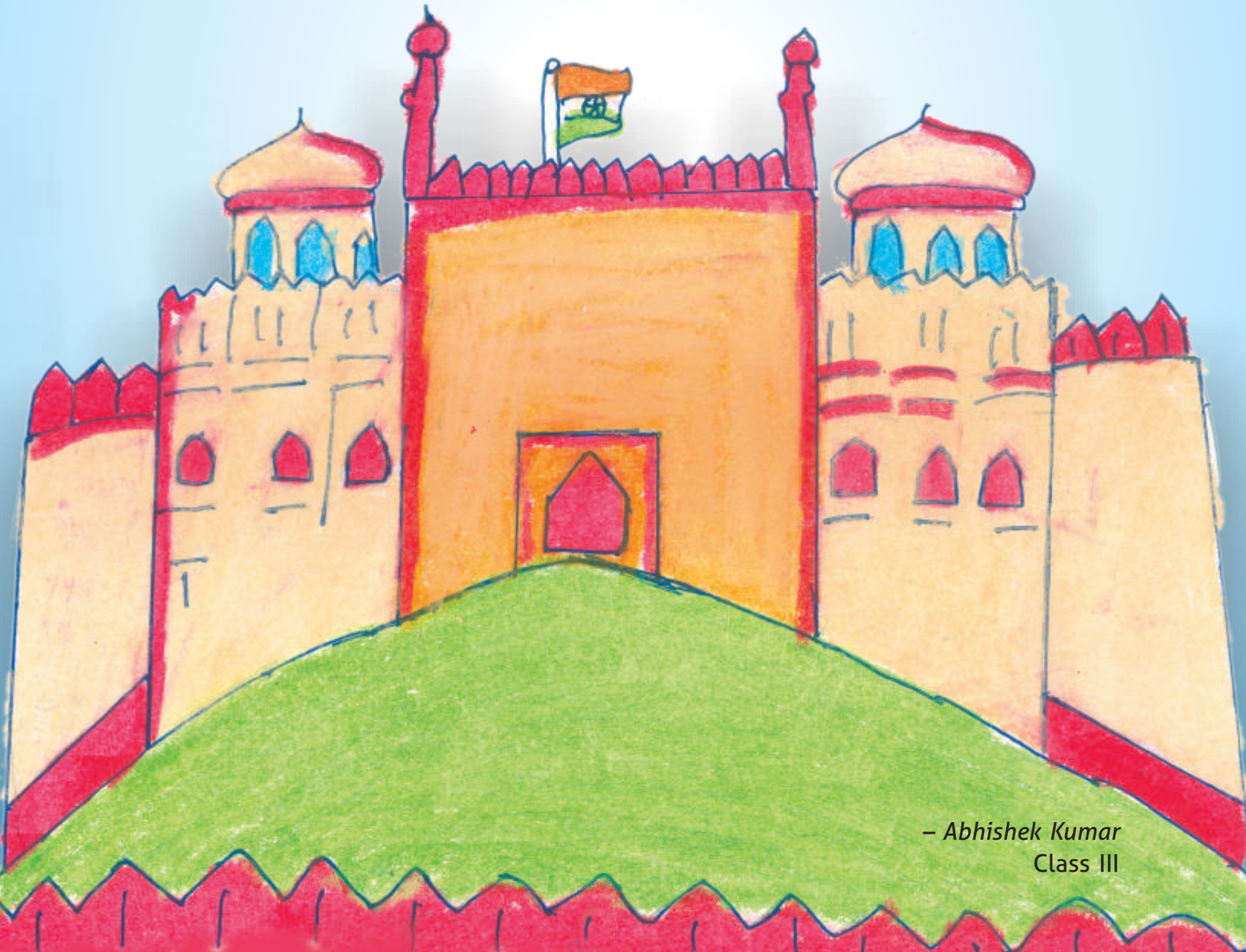

– *Abhishek Kumar*
Class III

उगता सूरज गान

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा।
आओ तुम भी बच्चों आओ
और हमारे संग में गाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

दिल में ये अरमान जगाओ
घर–घर में शिक्षा अपनाओ।
कोई बच्चा छूट ना जाये
घर–घर में आवाज लगाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

पढ़ो लिखो इंसान बनो तुम
अपने देश की जान बनो तुम
सब बच्चों को ये बतलायें
किरणों से भी आगे बढ़ जायें।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

मेरी ओर से.....

वर्ष 2012 बीत गया और कब हमने वर्ष 2013 में कदम रखा, हमें पता ही नहीं चल सका। कारण बहुत सरल है उगता सूरज की रोशनी में कब सुबह और कब शाम होती है हमें पता ही नहीं चल पाता। इसी रोशनी को फैलाने के लिए हमारी संस्था गत 7 वर्षों से कोशिश कर रही है आज करीब 1000 बच्चे उगता सूरज की तपश में तपकर विभिन्न स्कूलों में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इनमें कितने ही बच्चे बाल श्रम की दुनिया को छोड़कर आज स्कूल और शिक्षा की दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं। उगता सूरज पत्रिका इन्हीं बच्चों की जिन्दगी, प्रतिभा, कौशल और सुख-दुःख को दर्शाती हैं। यह एक ऐसा मंच है जहां हर बच्चा अपनी बात को आपके सामने रख सकता है, आपके साथ निर्भय होकर बांट सकता है। यह एक ऐसा मंच है जो बच्चों की मानसिक उन्नति और आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है।

यह जरूरी नहीं है कि सरकारी स्कूल बच्चों की शिक्षा की हर जरूरत को पूरा करने में खरा उतरें। बहुत सी कमियां पाई गई हैं जिसके कारण बच्चे सरकारी स्कूल में भर्ती तो होते हैं लेकिन कुछ छोड़ देते हैं या फिर पढ़ना, लिखना और जरूरी हिसाब-किताब को समझने में असमर्थ रहते हैं। इसे हम हमारे सरकारी स्कूल प्रणाली की असमर्थता कहें या हमारे में ही शिक्षा की तरफ लापरवाही! कारण कोई भी हों पर आखिरकार बच्चे सही शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। शिक्षा के अधिकार कानून (RTE) के तहत हमारी स्कूल शिक्षा प्रणाली को कई कदम उठाने की आवश्यकता है। हम सबको मिलकर इस दिशा में काम करना हैं।

उगता सूरज की उन्नति उसके बच्चों में हैं। आज जब बच्चे शिक्षा में आगे बढ़ रहे हैं उनकी जिम्मेदारी अपने प्रति ही नहीं अपने भाई-बहनों के प्रति भी बनती हैं ताकि वे भी इनके साथ-साथ शिक्षा को अपना सकें और एक अच्छी जिन्दगी की तरफ बढ़ सकें।

उगता सूरज बच्चों के साथ बहुत से लोग संस्थाएं और संसाधन जुड़े हुए हैं। हमारी कोशिश रहती है कि अधिक से अधिक लोग हमारे साथ जुड़ें और हम उगता सूरज को हर जगह पहुंचा सकें। इसी के साथ हम आपसे विदा लेते हैं और आशा करते हैं कि आपको उगता सूरज बच्चों की यह पहल अच्छी लगेगी।

अगले वर्ष के लिए शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. माला भण्डारी
अध्यक्ष
सदरग

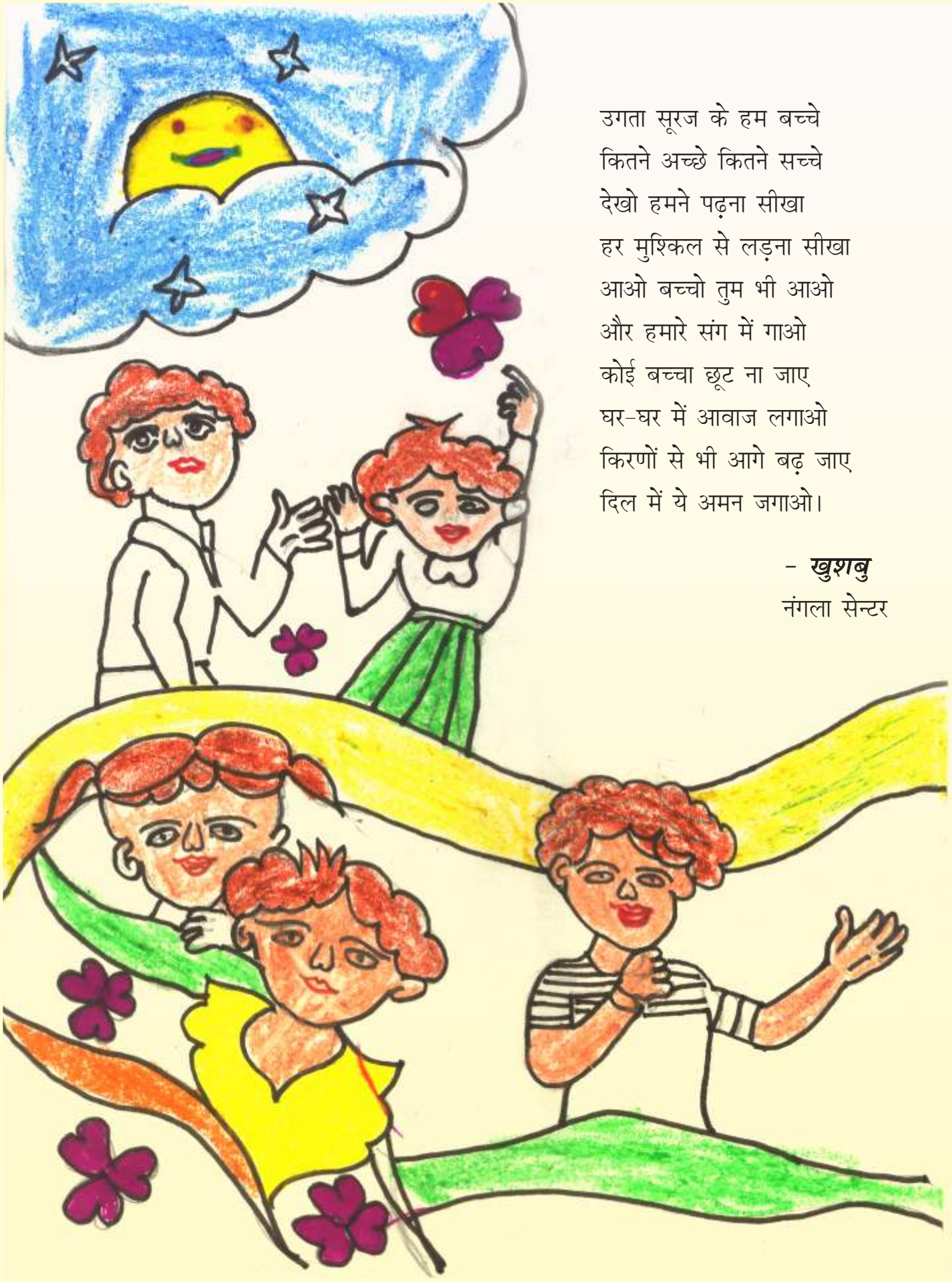

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने अच्छे कितने सच्चे
देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा
आओ बच्चो तुम भी आओ
और हमारे संग में गाओ
कोई बच्चा छूट ना जाए
घर-घर में आवाज लगाओ
किरणों से भी आगे बढ़ जाए
दिल में ये अमन जगाओ।

– ***खुशबु***
नंगला सेन्टर

Ugta Suraj

I feel very proud to be associated with Ugta Suraj. Ugta suraj is a programme where we educate children to face their upcoming challenges. When these children are enrolled in our centers, some of them even don't know to hold the pencil but hard work and dedication of our facilitators make them able not only to hold the pencil but also read and write.

Like the sun spread his rays to every part of the world and is available for every section of the world whether they are rich or poor similarly we the Ugta Suraj members are always available for the children who want to learn, read and write.

Through Ugta Suraj programme, we make sure that every child gets his/her right to education. We prepare our children to spread the rays of their knowledge.

It is truly said by Carol Bellamy that "Creating a world that is truly fit for children does not imply simply the absence of war ... it means having primary school nearby that educate children free of charge ... it means building a world fit for children, where every children can grow to adulthood in health, peace, and dignity".

Charchika Vijaya
Project coordinator
Ugta Suraj

माता पिता का साया

संजू झा
निठारी सेक्टर-31
उगता सूरज

बेटी की जरूरत होती है मां
उतने ही संस्कार देते हैं पिता
मां का महत्व ज्यादा है पाया
पर पिता का महत्व भी
कम नहीं बताया
बच्चे की जिन्दगी नहीं चलती
दोनों के बिना
इसलिए कहती हूं।
भगवान अगर जीवन दे
तो पहले माता-पिता की आयु बढ़ा
उसके बाद ही इस जमीं पर हमको ला
रातों के नींद खराब हुई मां की
तो पिता भी चैन से सोया कहां
इसलिए कहती हूं।
माता-पिता है एक सिक्के के दो पहलू की तरह
माना मां ने गोद में खिलाया है।
तो उंगली पकड़कर पिता ने चलना सिखाया
बताएं दोनों के फर्ज में
कब अन्तर पाया है।
इन दोनों की ममता की कीमत
कोई अब तक चुका न पाया है
मां ने बना के है खाना खिलाया
तो पिता ने हमारे लिए
धन है कमाया
माता-पिता हैं दोनों बराबर
यह लिखकर मैंने बस यही बताया
ईश्वर ने जो अनमोल तोहफा
इंसान को दिया है
वह है माता-पिता का साया
माता-पिता का साया।

सहजाद
निठारी सेन्टर

मेरा नाम सहजाद है मैं 10 साल का हूं।
मेरे दो भाई और तीन बहन है।
जब मैं लगभग दो साल का था तभी मेरे मम्मी-पापा में अक्सर लड़ाइ होती थी। जब मम्मी पापा की लड़ाई होती थी तो हम लोगों को पापा मम्मी मारते थे। और घर में खाना भी नहीं बनता था। पापा मेरे ठेला चलाते थे और मम्मी कोठी में काम करती है। एक दिन मम्मी ने किसी और से शादी कर ली और पापा किसी और से। मेरे पापा जो है। वह तो बेल्ट से पीटता है। और मम्मी को भी मारते हैं। मैं साइकिल की दुकान पर काम करता था और मेरी बड़ी बहन कोठी में काम करती है। एक दिन संजू मैम ने मुझे बुलाया और पढ़ने के लिए कहा। मैं बरात घर पढ़ने आया पर मेरे दूसरे वाला पापा ने मुझे बहुत मारा और बोला कि कल से साइकिल दुकान पर जाओगे क्योंकि वहां 20-30 रुपए रोज मुझे देता था। फिर संजू मैम मेरे घर गई और मेरे पापा से संजू मैम ने कहा और गुस्सा भी की तो मैं फिर सेन्टर में आने लगा। अब मैं 5वीं कक्षा में दुर्गा पब्लिक स्कूल में पढ़ता हूं। मेरे भाई और दो बहनें भी दुर्गा में पढ़ने जाते हैं। मुझे अब बहुत अच्छा लगता है।

कविता

रानी
उम्र 8 साल
उगता सूरज, निठारी सेक्टर 31

बहुत सारे फूल है पर कमल जैसा कोई नहीं
बहुत सारे पक्षी है पर मोर जैसा कोई नहीं
बहुत सारे झंडे हैं पर तिरंगा
जैसा कोई नहीं
बहुत सारे स्कूल हैं पर
उगता सूरज जैसा
कोई नहीं।

करो खुद को बुलंद

आरती कुमारी
उम्र 11 साल
नोएडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न, निठारी सेन्टर

करो खुद को बुलंद इतना कि
आसमान छू सको
जिन्दगी की हर मुश्किल को
सफलता से पार कर सको
अगर तलाश रहे हो मंजिल
तो देर न करो
इस खूबसूरत पल को
यूं गंवाया न करो
हर रात के बाद
आती है सुबह
हर हार के बाद
होती है जीत
महकते गुलशन से
मन न भरो
अभी और भी है मंजिलें
कोशिश कम न करो।

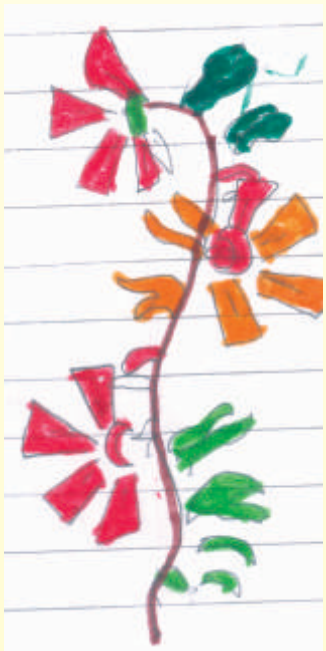

और अब

रोशनी
उम्र 9
बाल भारती
निठारी सेन्टर

देश को लूटने की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है योजना जो लूटने के काबिल है
ऐ मेरे वतन के लोगों न बिजली है न पानी
सिर्फ टैक्स देते जाओ कोई नहीं सुनेगा तुम्हारी कहानी!
ये देश है लुटेरे नेता, आतंकवादी
अपहरणकर्ताओं का इस देश का यारो क्या कहना
खा चले हम देश को बची, जान से साथियों अब
तुम्हारे हवाले खोखला कर दिया है वतन साथियों

सुनहरी किरण

अभिषेक कुमार
निठारी सेन्टर

एक किरण खिड़की से होकर
चुपके-चुपके आती है।
हुआ सबेरा, जागी मैया
कहकर हमें जगाती है।
किरण सुनहरी, प्यारी-प्यारी
धूप सुहानी लाती है।
आलस छोड़ो, काम करो सब
यह सन्देश सुनाती है।
रोज सबेरे दूर देश से,
दौड़ी-दौड़ी आती है।
घर में वन में, खेत बाग में,
सबको किरण जगाती है।

उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

रूपा
जाग्रती अनाव स्कूल
उम्र 14
कक्षा 9
सेक्टर 31, नोएडा

हर बुरे वक्त का अंत है होता
बेवजह आज इतना क्यों है रोता
क्यों हर पल उदास रहता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

हो जाएगी ये खत्म वो तुम्हारी काल रात
अंधेरे के बाद उजाला याद रख ये बात
अच्छे दिन देखता वही जो दुख सहता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

फिर से आज तुमको नया मौका मिला
देखना कहीं फिर ना खा जाओ धोखा
जो कीमत वक्त की पहचाने वही उड़ता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

दिखा दो जग को है क्या चमक हर
इंसान के अंदर होती है एक महक
पर कोशिश से ही पत्थर हिलता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

अभी तो तुमको बड़ी दूर है जाना
जिन्दगी ढलने से पहले बहुत कुछ है
तुमको पाना
पर जो तेज भागे फल उसे ही मिलता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

सोनी
उम्र 12
हरौला सेक्टर-5

मेरा नाम सोनी है। मेरे परिवार में 6 सदस्य हैं। मेरे पिताजी कम्पनी में काम करते हैं और माताजी भी काम करती है। मेरे परिवार बहुत मुश्किल से चल रही है। मेरे दो भाई है। एक का नाम सोनू और दूसरे का अंशु है। सोनू भईया बहुत बीमार रहता है। दो बार उनका पेट का ऑपरेशन हुआ था। पहले काम करते थे अब वह काम नहीं कर पाता।

दूसरा भाई अंशु है। वह ना बोल पाता है ना देख सकता और ना सुन सकता है। एक आंख का पांच बार ऑपरेशन हो चुका फिर भी वह देख नहीं सकता। मैं हमेशा उसको अपने साथ रखती हूं। फिर भी वह बहुत बार गुम हो गया था। उसको लेकर हम बहुत परेशानी का सामना करते हैं।

मैं अपने भाई बहन का बहुत ध्यान रखती हूं।

रेशमा
उम्र 11
हरौला सेक्टर-5

मेरा नाम रेशमा है। मेरे परिवार में 6 सदस्य हैं। मैं सबसे बड़ी हूं। मेरे परिवार चलाने के लिए मेरे मां काम करती हैं। क्योंकि मेरे पिताजी बहुत शराब पीते थे और घर में आकर लड़ाई करते थे। एक दिन पापा हमें छोड़कर चले गए। तब से मेरी मां सुबह से लेकर शाम तक मजदूरी करती है। और जितना पैसा मिलते है और बहुत मुश्किल से हमारा घर चलता है।

मैं चाहती हूं कि पढ़ाई करूं मेहनत करूं
अच्छी नौकरी करके मैं अपनी मां को
आराम दे सकूं।

मेरा सपना

प्रियंका
हरौला सेक्टर-5

मेरा नाम प्रियंका हैं में पिछले साल उगता सूरज में पढ़ती थी। फिर मैम ने मुझे प्राइवेट स्कूल में भर्ती करवाया। मेरा सपना यह है कि मैं बहुत बड़ी डांसर बनना चाहती हूं। और गरीब बच्चों को मुफ्त में डांस सिखाना चाहती हूं। मैं खुद भी अभी डांस सीख रही हूं। और साथ ही साथ पढ़ाई भी कर रही हूं।

राजलक्ष्मी, बरौला सेन्टर

मेरा सपना

विभा कुमारी
उगता सूरज
हरौला सेक्टर-5

मेरा नाम विभा कुमारी है मैं उगता सूरज में पढ़ती हूं। एक रोज मैं अपने घर की खिड़की के पास बैठी थी तो मेरी नजर अचानक एक लड़की के तरफ गई। मैंने देखा कि उस लड़की पर बहुत बड़ा अत्याचार हो रहा था। उसके पापा उसको बहुत मार रहे थे और वो लड़की बहुत रो रही थी। और बोल रही थी कि मैं भी सबकी तरह पढ़ना चाहती हूं। और पढ़कर कुछ बनना चाहती हूं। उसके पापा उसकी बात को मान ही नहीं रहे थे और बोल रहे थे कि लड़की कहीं बाहर पढ़ने के लिए नहीं जाती है। मैं जो देखी तो मुझे बहुत बुरा लगा और मैं सोच रही थी कि लड़की के ही साथ सब कुछ गलत क्यों होता है? लड़की को अपने हक से जीना क्यों नहीं पड़ता है?

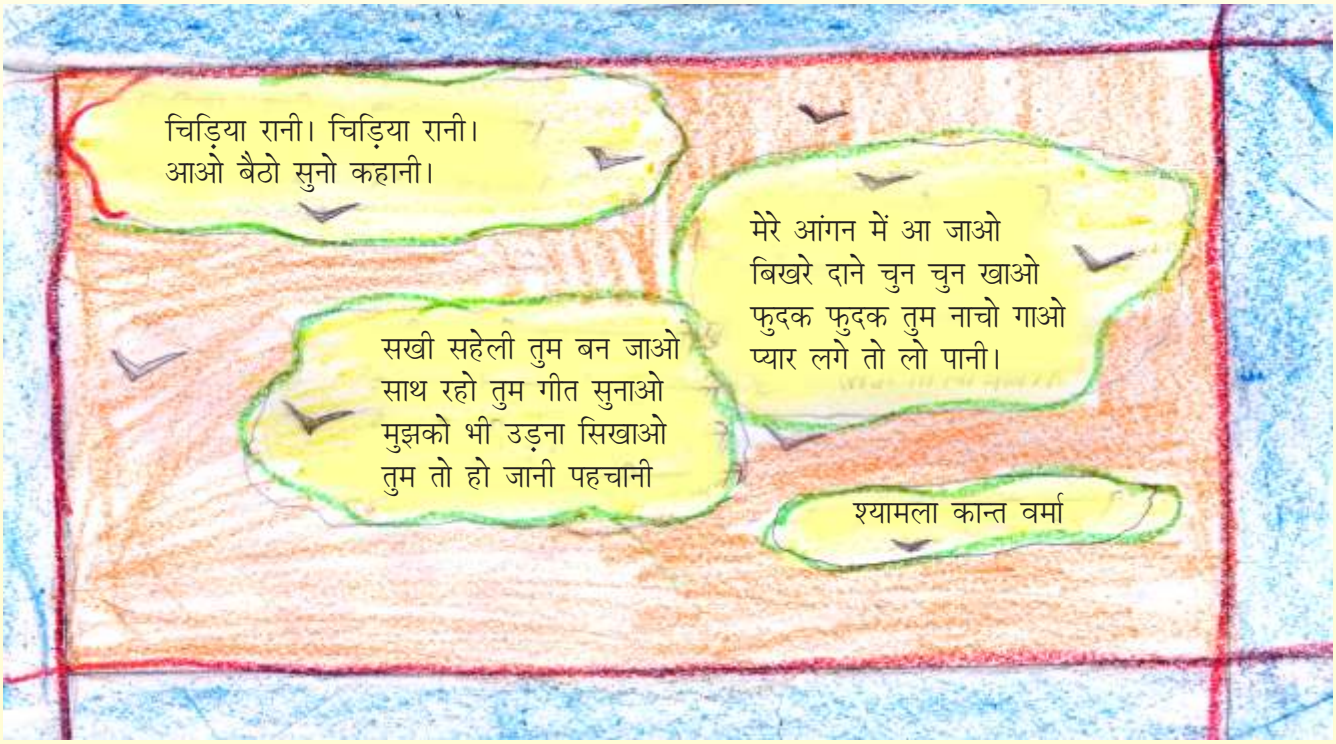

रोहिनी
हरौला सेन्टर

सड़क के उस पार एक बच्चा था जो अपनी मां से बिछड़ गया था। अब वो क्या करेगा वो जोर-जोर से रो रहा था। वो अपने मां के पास जाना चाहता था लेकिन वो नहीं जा सकता था क्योंकि उसे अपने घर का पता मालूम नहीं था। घर में उसकी मम्मी जोर-जोर से रो रही थी वो बहुत परेशान हो रही थी। जब उसकी मां बाहर गई ढूंढने तो उसने बहुत ढूंढा। तभी अपने बेटे को सड़क के उस पार रोते हुए देखा तो उसकी मां दौड़कर गई और अपने बेटे को सीने से लगा लिया फिर उसकी मां ने अपने भगवान की पूजा की और नारियल चढ़ाया।

बारिश की बूंदे

रूई से बादल नभ में बादल ढोल बजाते आए बादल
टप-टप बरसी कितनी बूंदे। अहा बारिश की ठंडी बूंदे
मेंढक उछले ताल तलैया कागज की नैया ताता थैया
कोयल कूके मोर भी नाचे टप-टप बरसी कितनी बूंदे
टुपर-टुपर बारिश की बूंदे बंद हुई खिड़की छतरी
पकड़ो पानी भरी सड़के भीगी भीगी हलवा पकौड़ी
खस्ता कचौड़ी शोर मचाएं सारे बच्चे खेलते कूदते
भागते बच्चे छप-छप मोती जैसी बूंदे
अहा बारिश की ठंडी बूंदे।

रोहिनी कुमारी
कक्षा 2, नौएडा सेक्टर-5

****

कुन्दन कुमार
उगता सूरज
हरौला सेन्टर
प्रियांशु राज
हरौला सेक्टर-5

- कुन्दन कुमार

सुबह

सूरज की किरणें आती है
सारी कलियां खिल जाती है
अंधकार सब खो जाता है
सब जग सुंदर हो जाता है
चिड़िया गाती है मिलजुलकर
बहते हैं उनके मीठे स्वर
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी
चलती है जैसे मसतानी
यह प्रात: की सुख बेला है
धरती का सुख अलबेला है
नई ताजगी नई कहानी
नया जोस पाते हैं प्राणी
खो देते हैं आलस सारा
और काम लगता है प्यारा
मेहनत प्यारी लगती है जिनको
मेहनत भली लगती है जिनको
मेहनत सबसे अच्छा गुण है
आलस बहुत बड़ा दुर्गुण है
अगर सुबह भी अलसा जा
तो क्या जग सुदर हो पाए

मेरा परिचय

मेरा नाम हिना है
मेरी मम्मी का नाम रजिया है।
मेरे पापा का नाम मो. परवेज है
मेरी एक बहन है
मेरे स्कूल का नाम उगता सूरज है
मुझे आम खाना अच्छा लगता है
मुझे हिन्दी पढ़ना अच्छा लगता है
मेरा एक सपना है कि मैं एक बड़ी डॉक्टर बनना चाहती हूं
मुझे उगता सूरज में पढ़ने का मौका मिला इसलिए आज मैं इतने बड़े स्कूल में पढ़ती हूं। मेरे स्कूल का नाम नौएडा पब्लिक स्कूल हैं मुझे उगता सूरज में खेलना और कलर करना और पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। मैं रोज यहां आती हूं।

हीना
कक्षा 5, हरौला सेन्टर

मेरा सपना

मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर बनना चाहती हूं। अपनी मम्मी का सपना पूरा करना चाहती हूं। मैं डॉक्टर बनकर गरीबों का इलाज करना चाहती हूं। मेरी मम्मी चाहती है कि मैं बहुत पढ़ूं और लिखूं। मेरी मम्मी मेरा हर कहना मानती है मैं जो कहती वो मेरी बात मानती है इसलिए मेरी मम्मी बहुत अच्छी है।

हीना
कक्षा 5, हरौला सेन्टर

संगति का फल

था गुलाब का पौधा कहीं पर फूल खिले थे उसमें सुंदर
लड़का एक वहां पर आकर सूंघा ढेला एक उठाकर
महक रह था ढेला ऐसा ताजा फूल महकता जैसा
फूल वहां पर झड़ते होंगे उसके ऊपर पड़ते होंगे
इससे उसमें खुशबू आई संगति का फल ऐसा भाई

हीना

चन्दा के गांव में तारों की छाव में हम सैर करने जाएंगे
चन्दा के गांव में बाएं पैर आगे निकलो धीरे-धीरे उसे घुमाओ
और सब घूम जाओ चन्दा चन्दा के गांव में चन्दा के गांव में
चन्दा के गांव में घर सैर करने जाएंगे चन्दा के गांव में

हीना

मेहन्दी की दुल्हन
शिवानी सिंह
बरौला सेन्टर

समीर

उगता सूरज, हरौला सेक्टर-5, नौएडा

सहिष्ठा

हरौला सेन्टर

दूर से देखा तो ताजमहल की सफाई हो रही थी
पास जाकर देखा तो जीजा और जीजी का
झगड़ा हो रही थी
हरे भरे घास पर मेरा इंतजार करना अगर हम ना
आया तो गाध से पीयर करन

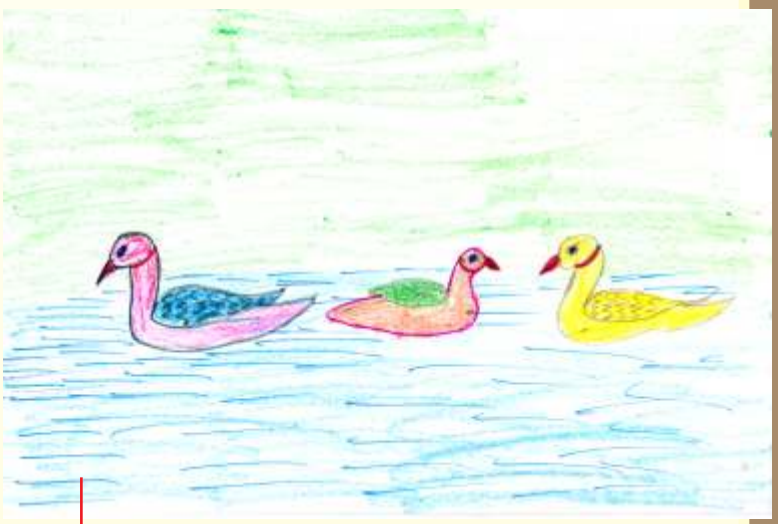

शोभा

उगता सूरज, बरौला

सपना

बरौला सेन्टर

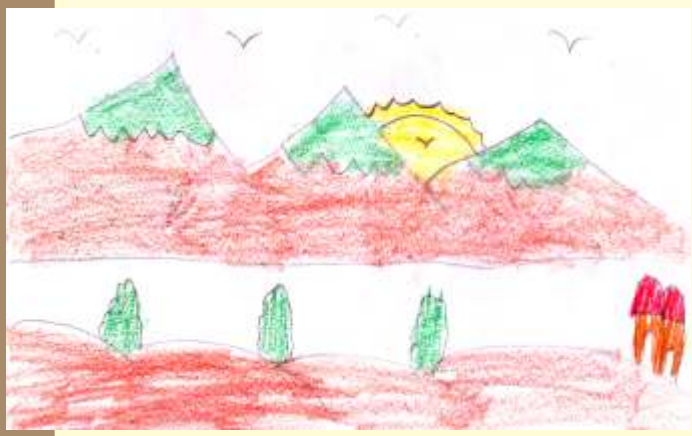

काजल
बरौला सेन्टर

खुशबु
बरौला सेन्टर

तमन्ना
बरौला सेन्टर

अंकु
बरौला सेन्टर

जल ही जीवन है

सुनिल
बरौला सेन्टर

मेरा नाम खुशबु है। मैं 10 साल की हूं। मेरे परिवार में पांच सदस्य है मेरे पापा कम्पनी में काम करते है और मम्मी कोठी में काम करती है मेरे दो भाई है अमित और सुनिल वो भी मेरे साथ पढ़ने आते हैं मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। मैं एक साल से यहां पढ़ने आ रही थी पहले मेरा छोटा ाााई अमित 3 साल का था तो मुझे उसकी देखभाल करनी होती थी और घर पर ही रहती थी मगर एक दिन मैं जब पार्क में खेल रही थी तब मुझे अन्नू और रीना मैम मिली उन्होंने मुझसे पूछा तुम स्कूल क्यों नहीं जाती तो मैंने उन्हें बताया कि मेरा भाई अभी छोटा है और दूसरा उसे मेरे पापा के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो मुझे पढ़ा सकें तब उन्होंने बोला कि हमारी एनजीओ बच्चों को मुफ्त में पढ़ाती है और कॉपी, पेंसिल सब देते हैं और तुम भाइ को लेकर पढ़ने आया करो तब से मैं रोज स्कूल जाती हूं अब मेरे भाई और मेरा एडमिशन सरकारी स्कूल में होने वाला है अब आगे भी पढ़ पाऊंगी।

खुशबु, बरौला सेन्टर

मेरा नाम तमन्ना है मैं उगता सूरज स्कूल में पढ़ती हूं मेरे घर में चार सदस्य है मैं मेरी मम्मी पापा और छोटी बहन। मेरे पापा सब्जी बेकते है और housewife है मैं रोज पढ़ने जाती है मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता और मैं बड़ी होकर Teacher बनना चाहती हूं मैं अब तक गांव में पढ़ी थी लेकिन एक साल पहले जब हम बरौला में रहने आए तो हमारे इतने पैसे न थे कि मैं अच्छे स्कूल में पढ़ूं तब मुझे सदरग एनजीओ के बारे में पता चला और मेरे पापा मम्मी ने Admission कराया तब शुरू में मुझे ज्यादा कुछ पढ़ना नहीं आता था लेकिन ।दन और त्ममदं मैम ने मुझे अच्छे से पढ़ाया और समझाया कि अगर मैं अच्छे पढूंगी तभी कुछ बन पाऊंगी और मैंने पहले से ज्यादा मेहनत करने और अब अच्छे स्कूल में पढ़ सकती हूं मेरे एडमिशन अंकित मेमोरियल स्कूल में हो गया है और अब कक्षा 2 में पढ़ती हूं।

तमन्ना
कक्षा 2, बरौला सेन्टर

मैं अन्नू चौहान सदरग एनजीओ बरौला में फैसिलिटेटर के तौर में 2 साल से काम कर रही हूं मैं 2012 से यहां पढ़ाती हूं मैंने जब शुरू में Join किया था तब काफी डर लगता था आने जाने में मगर आज मैं स्वतंत्र हो गई हूं। मुझमें विश्वास आ गया है कि मैं भी कुछ कर सकती हूं डरने से काम नहीं होता मैंने यहां आकर महसूस किया अभी भी ऐसे बहुत बच्चे हैं जो पढ़ना तो चाहते हैं मगर वो पैसे न होने के कारण या पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण पढ़ नहीं पाते। माला मैम ने इन बच्चों के लिए यहां बहुत कुछ अच्छा किया फ्री में पढ़ती है उन्हें कॉपी किताब पेंसिल सब सामान देती है ताकि इन्हें पढ़ने में दिक्कत न हो और समय-समय घुमाने भी ले जाते हैं। इससे और बच्चे भी आते हैं पढ़ने के लिए। मुझे इन बच्चों को पढ़ाने में इनकी मदद करने में बहुत अच्छा लगता है और आगे भी इसी क्षेत्र में काम करना चाहती हूं और मैं माला मैम को धन्यवाद कहना चाहूंगी कि उन्होंने मुझे यहां पढ़ाने और फैसिलिटेटर के तौर पर काम करने का मौका दिया।

अन्नू चौहान
बरौला सेन्टर फैसिलिटेटर

पूजा
नगला सेन्टर

सोनम
नंगला सेन्टर

मेरा नाम सोनम है मैं डॉक्टर बनना चाहती हूं क्योंकि मेरा भाई एक आंख से देख नहीं पाता है और मेरे भाई पर स्कूल में सभी बच्चे हंसते हैं तो मुझे बहुत दु:ख होता है। मेरे माता-पिता के पास इलाज के लिए पैसे नहीं है इसलिए मैं चाहती हूं कि मैं डॉक्टर बन के गरीब लोगों का मुफ्त में इलाज करूंगी ताकि मेरे भाई की तरह किसी और बच्चे का भविष्य खराब न हो।

बिशाल
नंगला सेन्टर

आओ आओ चन्दा मामा
पहनो मेरा यह पजामा
रोज शाम को खूब नहाना
खाना पीना मौज उड़ाना
रोज शाम को घर मेरे आना

रोहित
नंगला सेन्टर

कोमल उपाध्याय
नंगला सेन्टर

मेरा नाम कोमल उपाध्याय है मैं सदरग एनजीओ नंगला में फैसिलिटेटर के तौर पर एक साल से काम कर रही हूं मैं 2014 से यहां पर पढ़ा रही हूं मुझे बहुत अच्छा लगता है मैं छोटे बड़े बच्चों को पढ़ाती हूं जब से मैं यहां पढ़ाने लगी हूं मेरी नॉलेज और भी ज्यादा बढ़ गई है।

जब मैं शुरू में पढ़ाने आयी थी जब मुझे बहुत डर लगता था कि मैं कैसे संभाल पाऊंगी इतने बच्चों को, वक्त के साथ-साथ मुझे बच्चों के साथ रहने की आदत हो गई। और मुझे खुशी होती है कि जो पहले मैं खुद इस जगह पर पढ़ती थी जहां ये बच्चे पढ़ रहे हैं, भूतकाल में मैं वहीं इन्हीं बच्चों की तरह पढ़ी थी, आज मैं उन बच्चों को पढ़ाकर उनका भविष्य बनाना चाहती हूं उन्हें भी कल अपने जैसा अच्छा टीचर बनाना चाहती हूं। मुझे बहुत खुशी है कि मैं आज उगता सूरज से जुड़ी हुई हूं।

धन्यवाद

नया जमाना

संजू पटेल
उगता सूरज, निठारी सेक्टर-31 नौएड

आज का इंसान अमर
भीतर से कटपीस ऊपर से ब्यान
आ का नेता
डबल रोल करने वाला अभिनेता
आज का टीचर
कांपता हुआ पर दे रहा है लैक्चर।
आज का स्टूडैंट
कॉपी कोरी अंक सौ परसेंट
आज की सहेली
कभी न समझ में आने वाली पहेली
आज का मित्र
एल्बम में लगने वाला चित्र
आज का गुरू
टयूशन मिलने पर होता है। शुरू

ज्योति
नंगला सेन्टर

– Nandini
Nagla Centre

SADRAG

Social
And
Development
Research &
Action
Group

L-16, Sector-25,
Noida-201301, U.P., India

Programme Locations:
Community Centres Harola,
Nithari, Nayabans, Barola,
Agahpur, Sector-50, Basti
Ph.: 9313678369 / 0120-3264313
E-mail: mail@sadrag.org
Url: www.sadrag.org

GALAXY • 98105 73082